बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १७ जून, २००७)

(समय : सुबह ९:०० से १२:००) | **सत्संग प्रवीण - १** | **कुल प्राप्तांक : १००**

सूचना : दाहिनी ओर दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं ।

विभाग-१ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना - प्रथम आवृत्ति, अप्रैल २००३

प्रश्न.१. निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए । (६ गुण)

१. अक्षरब्रह्म - धाम रूप में । ११५
२. गुणातीत संत के लक्षण - वचनामृत के आधार पर । ८९
३. पुरुषोतम नारायण सर्वत्र व्यापक तथा मूर्तिमान हैं । २०
४. भगवान को सर्वकर्ताहर्ता जानने की आवश्यकता । ९

प्रश्न.२. प्रमाण, सिद्धांत अथवा कडी पर से विषय का शीर्षक दीजिए । (५ गुण)

१. अन्य अवतार समान जानेगा तो उस स्वरुप का द्रोह कहलाएगा । ३५
२. अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् । २९
३. बोलते-चलते जो भगवान है, वही प्रत्यक्ष कहलातें हैं । ६८
४. भगवान करचरणादिक समग्र अंगों से परिपूर्ण हैं उन्हें अरूप कहना वही उनका द्रोह है और उसके बिना चंदनादिक द्वारा पूजा करते हैं, फिर भी वह भगवान का द्रोही माना जायेगा । १४
५. एवा संत जम्ये जम्या श्याम, जम्या सहु देवता, जम्या सर्वे लोक, सर्वे धाम, सहु थया तृप्तता । ९७

प्रश्न.३. निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४ गुण)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. श्रीजीमहाराज सर्वोपरि - परमहंसों के पदों में । ४४
(१) ☐ जे छे मन वाणी ने अगम, ते तो आज थया छे सुगम । (२) ☐ क्षर अक्षर थकी ए तो पर छे जो ।
(३) ☐ जीव ईश्वर तणो रे, माया काल पुरुषप्रधान । (४) ☐ मारी दृष्टिए जक्त उपजे शमे, अनेक रूपे माया थई ।

२. परब्रह्म ब्रह्म को लीन करते है वे बातें बताते हुए उदाहरण । १२१
(१) ☐ लकड़ी में अग्नि का प्रवेश । (२) ☐ लोहे में अग्नि का प्रवेश ।
(३) ☐ बर्फ में अग्नि का प्रवेश । (४) ☐ सूर्यप्रकाश में समस्त तारागणों एवं चन्द्रमादि का तेज विलीन ।

प्रश्न.४. निम्नलिखित किसी एक प्रसंग का वर्णन करके उसका सिद्धांत लिखें । (४ गुण)

१. मैं तो आप में अखंड रहता हूँ । ८६
२. स्वामी की महानता तो अनादि से हैं । १३२
३. पर्वतभाई को चौबीस अवतारों के दर्शन । ५३

प्रश्न.५. किन्हीं दो विषयों के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) (८ गुण)

१. ''स्वामी अक्षर हैं'' - उनके जीवन और कार्य के आधार पर । १५१
२. भगवान तथा भगवान के साधु में मनुष्यभाव दिखाई देता है, इससे बढ़कर कोई बुरी बात नहीं । ३१
३. अक्षर ब्रह्म का स्वरूप । ११३
४. प्रकट भगवान या भगवान के संत के द्वारा मोक्ष । ७५

प्रश्न.६. निम्नलिखित किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें । (बारह पंक्ति में) (८ गुण)

१. सोरठ देश में अवतारों, देवदेवियाँ, मंत्र-तंत्र, वहम के विषय में उनका प्रभाव निकाल दिया । १५२
२. महाराज ने गुणातीतानंद स्वामी को दूर भेजने की अनिच्छा प्रदर्शित की । १३०
३. शिवलाल सेठ गुणातीतानंद स्वामी के पास व्यवहार और मोक्ष दोनों सीखने के लिए गए । १४२
४. शास्त्र में कितने ही भक्त और अवतारों ने अपने लिए परभाव - पुरुषोत्तम भाव शब्द कहे हैं । ६२

प्रश्न.७. उपासना में क्या समझना ? और क्या न समझना ? उसके आधार से निम्न विधानों की पूर्ति कीजिए । (७ गुण)

(उपासना में क्या समझना ?)

१. हमारी उपासना अक्षररूप ..... दो चरण की हैं । १५६
२. अक्षरब्रह्म भी अक्षरधाम में ..... निर्गुण कर देते हैं । १५६
३. सगुण और ..... भी सूक्ष्म हैं । १५६
४. पुरुषोतम नारायण की तरह ..... हैं । १५६

(उपासना में क्या न समझना ?)

१. अकेले पुरुषोत्तम ही ..... नहीं समझना चाहिए । १५८
२. जीवात्मा ..... पृथक् नहीं । १५८
३. सद्गुरु गुणातीतानंद स्वामी ..... कह सकते हैं ऐसा नहीं समझना चाहिए । १५८

(पृष्ठ पलटिये)

प्रति,

परीक्षा व्यवस्थापक (दिनांक १७ जून, २००७; परीक्षा - सत्संग प्रवीण - १; माध्यम - हिन्दी; समय - सुबह ९:०० से १२:००)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किए हुए पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर परीक्षा दी है। निम्नलिखित बातें सही हैं, यह आप की जानकारी के लिए है।

६०१

परीक्षार्थी की अटक : परीक्षा दिनांक :

परीक्षार्थी का नाम : परीक्षा का समय :

पिता / पति का नाम : बैठक क्रमांक : ☐☐☐☐☐☐

परीक्षा स्थल का नाम : केंद्र नंबर : ☐☐☐☐

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर : केंद्र का नाम :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को दे दें। सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहने वाले परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा लें ।

प्रश्न.८. विस्तृत नोंध लिखिए । **(५ गुण)**

गुणातीत स्वामी अक्षर हैं - इस बात की शास्त्रीजी महाराज की परख । १४९

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ - प्रथम आवृत्ति, नवम्बर २००२ और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज - प्रथम आवृत्ति, नवम्बर २००३

प्रश्न.९. निम्नलिखित विधान कौन, किसे और कब कहता है यह लिखिए । **(९ गुण)**

१. ''नैष्ठिक ब्रह्मचर्य बिलकुल असंभव है, किसी से पूर्णत: पाला नहीं जा सकता ।'' (स.वा.भा.-३) **अथवा** १७
२. ''आप के धन का सही उपयोग इसी प्रकार होना चाहिए ।'' (स.वा.भा.-३) ५१
३. ''स्वामी, मुझे आपकी शरण में ले लीजिए ।'' (स.वा.भा.-३) **अथवा** ३५
४. ''यदि तुम्हारे पास अच्छे संस्कार होंगे तो तुम्हारे घर के खपरैल भी सोने के बन जाएँगे ।'' (युगविभूति) **अथवा** ५१
५. ''मुझे विश्वास है कि हमारी प्रार्थना अवश्य काम करेंगी ।'' (युगविभूति) **अथवा** ५९
६. ''इसे बाहर भी मत जाने देना, अन्यथा लोग लकड़ी, डंडे लेकर खड़े हैं ।'' (युगविभूति) ४५

प्रश्न.१०. निम्नलिखित वाक्यों के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) **(८ गुण)**

१. वजेसिंहजी महाराज ने भगा दोशी को बालक की मरजी के अनुसार धर्मपालन करने की अनुमति दे दी । (स.वा.भा.-३) **अथवा** ७६
२. कुशलकुँवरबा को महाराज के स्वरूप की प्रतीति हो गई । (स.वा.भा.-३) ५८
३. रतनसिंह का कष्ट जीवन के अमूल्य आनन्द का सुयोग था । (युगविभूति) **अथवा** ५३
४. स्वामी ने भगवतचरण स्वामी को ठाकुरजी की मर्यादा रखने के लिए कहा । (युगविभूति) २५

प्रश्न.११. निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में) **(८ गुण)**

१. धर्मपरायण खुशाल भट्ट का बचपन। (स.वा.भा.-३) **अथवा** १, २, ३
२. धन्य धन्य ऐ संत सुजाणने..... कीर्तन का सार लिखिए । (स.वा.भा.-३) ४६
३. शाही सन्मान - शाही अपमान (युगविभूति) **अथवा** ३०, ३९
४. भाषा के बंधन से पर । (युगविभूति) २९

प्रश्न.१२. निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(५ गुण)**

१. पर्वतभाई श्रीजीमहाराज के पलंग से दूर किस लिए बैठे ? (स.वा.भा.-३) ७२
२. गोपालानंद स्वामी ने सत्संग में क्या योगदान दिया ? (स.वा.भा.-३) १२
३. गढड़ा में 'अक्षर ओरडी' किसने बनाई ? (स.वा.भा.-३) ४३
४. मि. कार्लोस को स्वामीश्री के सम्पर्क में आते ही कैसा अनुभव हुआ ? (युगविभूति) २७
५. योगीजी महाराज ने भक्तों को निर्देशित करते हुए क्या कहा था ? (युगविभूति) ९

प्रश्न.१३. निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **(८ गुण)**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. कुशलकुंवरबा की समर्पणभक्ति । (स.वा.भा.-३) ६१, ६२
   (१) ☐ महाराज और संतों को नित्य नवीन थाल परोसते ।
   (२) ☐ राज्य अर्पण करने को तत्पर हुए ।
   (३) ☐ महाराज को छूटी धार से घी परोसते हुए देखकर खुश होते ।
   (४) ☐ पौत्र विजयदेव को परमहंस करने के लिए अर्पण किया ।
२. पर्वतभाई को संतों के साथ कितनी अपार आत्मबुद्धि । (स.वा.भा.-३) ७०
   (१) ☐ मेरा तो नियम है । (२) ☐ महाराज ने मेरा संकल्प सत्य किया ।
   (३) ☐ क्या आप दादा खाचर के नौकर बनेंगे । (४) ☐ मेरे इष्टदेव भोजन ग्रहण करेंगे, तब मैं कर सकता हूँ ।
३. प्रमुखस्वामी की आध्यात्मिकता । (युगविभूति) १४
   (१) ☐ भक्ति की पराकाष्ठा तक पहुँचकर भी अहंशून्य हृदय । (२) ☐ कुदरती मुश्केली में दौड़कर जानेवाले ।
   (३) ☐ महानता की लेशमात्र भी इच्छा नहीं । (४) ☐ 'मालिक' होने का कोई 'स्व' बोध नहीं ।
४. शास्त्रीजी महाराज के हृदय का रत्न : नारायणस्वरूपदास (युगविभूति) १०, ११
   (१) ☐ शुद्ध पंचवर्तमान एवं अनन्य गुरुभक्ति । (२) ☐ अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के प्रमुख पद पर नियुक्त ।
   (३) ☐ दिनांक १०-१-१९३९ : भागवती दीक्षा । (४) ☐ पादरा मे जन्म ।

विभाग-३ : निबंध

प्रश्न.१४. निम्नलिखित किसी <u>एक</u> विषय पर करीब ६० पंक्तियों में निबंध लिखिए । **(१५ गुण)**

१. आदर्श गुरु-शिष्य : B.A.P.S. की विशेषता । २. देश का सच्चा धन - संस्कारी युवक ।
३. झोली पर निर्भर मन्दिरें - शास्त्रीजी महाराज के जीवन में सार्थक होती हुई उकित ।

सूचना : उपरोक्त सभी प्रश्नों में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न और एक निबंध दिनांक १५ जुलाई, २००७ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावनाएँ हैं ।

❋ ❋ ❋